

शेख फ़रीद – सबद ८३
फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३८२

फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥
जिन्ह नैण नींद्रावले तिन्ह मिलणु कुआउ ॥८०॥

सार: आंतरिक गुण अक्सर दैनिक जीवन के शोर में छिपे रहते हैं। वह शांत होकर स्वयं को समझने, रुकने और भागने के दबाव से आज़ाद होकर, सामने आते हैं। बहुत से लोग ज़िंदगी में अपने विचारों और व्यवहार को बनाने वाले गहन स्वरूप से अनजान रहते हैं। जबकि, शांति में शक्ति, बेचैनी और विचारों की स्पष्टता जैसी ज़रूरी बातें सामने आती हैं। इससे पता चलता है कि अंतर्दृष्टि निरंतर क्रिया से नहीं बल्कि मन की शांति के उद्देश्यपूर्ण पलों से सामने आती है।

फरीदा राति कथूरी वंडीऐ सुतिआ मिलै न भाउ ॥
फ़रीद कहते हैं कि रात में कस्तूरी मृग अपनी सुगंध फैलाता है पर जो सोया रहता है, वह उसे अनुभव नहीं कर पाता। इससे पता चलता है कि आंतरिक गुण मौन आत्मनिरीक्षण पर पहचाना जाता है, अज्ञानता की नींद में नहीं।

जिन्ह नैण नींद्रावले तिन्ह मिलणु कुआउ ॥८०॥
जिनकी आँखें नींद में हैं, वह इसे कैसे पा सकते हैं? यह दिखाता है कि कैसे लापरवाही की नींद और सुस्त समझ सर्वव्यापी स्रोत के साथ सामंजस्य बिठाने की संभावनाओं को कम कर देती है। (८०)

तत्त्व: शेख फ़रीद कहते हैं कि जब मन लापरवाही की अवस्था में होता है तब वह उस सर्वव्यापी जागरूकता के साथ सामंजस्य बिठाने से भटक जाता है जो हमारे अस्तित्व का सार है। जैसे धूल से ढकी खिड़की सूरज की रोशनी को रोकती है, वैसे ही हमारी लापरवाही हमारे अनुभव पर पर्दा डाल देती है। कोई बाहर से व्यस्त और सक्षम लग सकता है फिर भी भीतर से मंद और विभाजित महसूस

कर सकता है, जीवन की गहराई को समझे बिना केवल सतह को ही छू सकता है। वास्तविक
सामंजस्य के लिए जागृत, भीतरी स्पष्टता की ज़रूरत होती है जो सर्वव्यापी एकत्व को पहचानती है।

सबद व्याख्या विनइंदर कौर और अमरदीप सिंह

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com